श्री तुलसी चालीसा

इन पाठों के बारे में

स्रोत — हर पाठ अपने स्रोत, परम्परा और संस्करण के साथ छपा है। अन्य परम्पराओं और संस्करणों में शब्दों में थोड़ा अन्तर हो सकता है।

लिप्यन्तरण — रोमन पंक्ति देवनागरी से बना IAST लिप्यन्तरण है (ā = दीर्घ आ, ṃ = अनुस्वार, ḥ = विसर्ग, ś/ṣ = श/ष, c = च)। हिन्दी, अवधी और ब्रज पाठों में शब्द के अन्त का मौन 'अ' नहीं लिखा जाता। लिप्यन्तरण में वैदिक स्वर नहीं दिखते।

श्री तुलसी चालीसा

प्रकार	चालीसा
देवता	तुलसी माता
संस्करण	मिलान किया गया पाठ
परम्परा	वैष्णव
स्रोत	51 चालीसा संग्रह (आरतियों सहित) — रणधीर प्रकाशन, हरिद्वार (2004) — Scan pages 229–232
आभार	पाठ मुद्रित प्रति के स्कैन से लिया गया। सार और अर्थ: उद्योग ज्योतिष सम्पादकीय टीम।
कॉपीराइट	Traditional devotional text in wide circulation. The poet named in the closing verse is a traditional attribution; no mo

श्री तुलसी महारानी, करूँ विनय सिरनाय ।

śrī tulasī mahārānī, karūm vinay siranāy |

जो मम हो संकट विकट, दीजै मात नशाय ॥

jo mam ho saṃkaṭ vikaṭ, dījai māt naśāy ||

नमो नमो तुलसी महारानी ।

namo namo tulasī mahārānī |

महिमा अमित न जाय बखानी ॥ १ ॥

mahimā amit na jāy bakhānī || 1 ||

दियो विष्णु तुमको सनमाना ।

diyo viṣṇu tumako sanamānā |

जग में छायो सुयश महाना ॥ २ ॥

jag meṃ chāyo suyaś mahānā || 2 ||

विष्णुप्रिया जय जयतिभवानि ।

viṣṇupriyā jay jayatibhavāni |

तिहूं लोक की हो सुखखानी ॥ ३ ॥

tihūṃ lok kī ho sukhakhānī || 3 ||

भगवत पूजा कर जो कोई ।

bhagavat pūjā kar jo koī |

बिना तुम्हारे सफल न होई ॥ ४ ॥

binā tumhāre saphal na hoī || 4 ||

जिन घर तव नहिं होय निवासा ।

jin ghar tav nahiṃ hoy nivāsā |

उस पर करहिं विष्णु नहिं बासा ॥ ५ ॥

us par karahiṃ viṣṇu nahiṃ bāsā || 5 ||

स्रोत-सहित पारम्परिक पाठ। किसी निश्चित परिणाम का दावा नहीं।

करे सदा जो तव नित सुमिरन ।

kare sadā jo tav nit sumiran |

तेहिके काज होय सब पूरन ॥ ६ ॥

tehike kāj hoy sab pūran || 6 ||

कातिक मास महात्म तुम्हारा ।

kātik mās mahātma tumhārā |

ताको जानत सब संसारा ॥ ७ ॥

tāko jānat sab saṃsārā || 7 ||

तव पूजन जो करैं कुंवारी ।

tav pūjan jo karaiṃ kuṃvārī |

पावै सुन्दर वर सुकुमारी ॥ ८ ॥

pāvai sundar var sukumārī || 8 ||

कर जो पूजा नितप्रति नारी ।

kar jo pūjā nitaprati nārī |

सुख सम्पत्ति से होय सुखारी ॥ ९ ॥

sukh sampatti se hoy sukhārī || 9 ||

वृद्धा नारी करै जो पूजन ।

vṛddhā nārī karai jo pūjan |

मिले भक्ति होवै पुलकित मन ॥ १० ॥

mile bhakti hovai pulakit man || 10 ||

श्रद्धा से पूजै जो कोई ।

śraddhā se pūjai jo koī |

भवनिधि से तर जावै सोई ॥ ११ ॥

bhavanidhi se tar jāvai soī || 11 ||

कथा भागवत यज्ञ करावै ।

kathā bhāgavat yajña karāvai |

तुम बिन नहीं सफलता पावै ॥ १२ ॥

tum bin nahīṃ saphalatā pāvai || 12 ||

छायो तब प्रताप जगभारी ।

chāyo tab pratāp jagabhārī |

ध्यावत तुमहिं सकल चितधारी ॥ १३ ॥

dhyāvat tumahiṃ sakal citadhārī || 13 ||

तुम्हीं मात यंत्रन तंत्रन में ।

tumhīṃ māt yaṃtran taṃtran meṃ |

सकल काज सिधि होवै क्षण में ॥ १४ ॥

sakal kāj sidhi hovai kṣaṇ meṃ || 14 ||

औषधि रूप आप हो माता ।

auṣadhi rūp āp ho mātā |

सब जग में तव यश विख्याता ॥ १५ ॥

sab jag meṃ tav yaś vikhyātā || 15 ||

स्रोत-सहित पारम्परिक पाठ। किसी निश्चित परिणाम का दावा नहीं।

देव रिषी मुनि औ तपधारी ।

dev riṣī muni au tapadhārī |

करत सदा तव जय जयकारी ॥ १६ ॥

karat sadā tav jay jayakārī || 16 ||

वेद पुरानन तव यश गाया ।

ved purānan tav yaś gāyā |

महिमा अगम पार नहिं पाया ॥ १७ ॥

mahimā agam pār nahiṃ pāyā || 17 ||

नमो नमो जै जै सुखकारनि ।

namo namo jai jai sukhakārani |

नमो नमो जै दुखनिवारनि ॥ १८ ॥

namo namo jai dukhanivārani || 18 ||

नमो नमो सुखसम्पति देनी ।

namo namo sukhasampati denī |

नमो नमो अघ काटन छेनी ॥ १९ ॥

namo namo agh kāṭan chenī || 19 ||

नमो नमो भक्तन दुःख हरनी ।

namo namo bhaktan duḥkh haranī |

नमो नमो दुष्टन मद छेनी ॥ २० ॥

namo namo duṣṭan mad chenī || 20 ||

नमो नमो भव पार उतारनि ।

namo namo bhav pār utārani |

नमो नमो परलोक सुधारनि ॥ २१ ॥

namo namo paralok sudhārani || 21 ||

नमो नमो निज भक्त उबारनि ।

namo namo nij bhakta ubārani |

नमो नमो जनकाज संवारनि ॥ २२ ॥

namo namo janakāj saṃvārani || 22 ||

नमो नमो जय कुमति नशावनि ।

namo namo jay kumati naśāvani |

नमो नमो सब सुख उपजावनि ॥ २३ ॥

namo namo sab sukh upajāvani || 23 ||

जयति जयति जय तुलसीमाई ।

jayati jayati jay tulasīmāī |

ध्याऊँ तुमको शीश नवाई ॥ २४ ॥

dhyāūm tumako śīś navāī || 24 ||

निजजन जानि मोहि अपनाओ ।

nijajan jāni mohi apanāo |

बिगड़े कारज आप बनाओ ॥ २५ ॥

bigaṛe kāraj āp banāo || 25 ||

स्रोत-सहित पारम्परिक पाठ। किसी निश्चित परिणाम का दावा नहीं।

करूँ विनय मैं मात तुम्हारी ।

karūm vinay maiṃ māt tumhārī |

पूरण आशा करहु हमारी ॥ २६ ॥

pūraṇ āśā karahu hamārī || 26 ||

शरण चरण कर जोरि मनाऊँ ।

śaraṇ caraṇ kar jori manāūm |

निशदिन तेरे ही गुण गाऊँ ॥ २७ ॥

niśadin tere hī guṇ gāūm || 27 ||

करहु मात यह अब मोपर दाया ।

karahu māt yah ab mopar dāyā |

निर्मल होय सकल ममकाया ॥ २८ ॥

nirmal hoy sakal mamakāyā || 28 ||

मांगू मात यह बर दीजै ।

māṃgū māt yah bar dījai |

सकल मनोरथ पूर्ण कीजै ॥ २९ ॥

sakal manorath pūrṇa kījai || 29 ||

जानूं नहिं कुछ नेम अचारा ।

jānūṃ nahiṃ kuch nem acārā |

छमहु मात अपराध हमारा ॥ ३० ॥

chamahu māt aparādh hamārā || 30 ||

बारह मास करै जो पूजा ।

bārah mās karai jo pūjā |

ता सम जग में और न दूजा ॥ ३१ ॥

tā sam jag meṃ aur na dūjā || 31 ||

प्रथमहि गंगाजल मंगवावे ।

prathamahi gaṃgājal maṃgavāve |

फिर सुन्दर स्नान करावे ॥ ३२ ॥

phir sundar snān karāve || 32 ||

चन्दन अक्षत पुष्प चढ़ावे ।

candan akṣat puṣpa caṛhāve |

धूप दीप नैवेद्य लगावे ॥ ३३ ॥

dhūp dīp naivedya lagāve || 33 ||

करे आचमन गंगा जल से ।

kare ācaman gaṃgā jal se |

ध्यान करे हृदय निर्मल से ॥ ३४ ॥

dhyān kare hṛday nirmal se || 34 ||

पाठ करे फिर चालीसा की ।

pāṭh kare phir cālīsā kī |

अस्तुति करे मात तुलसा की ॥ ३५ ॥

astuti kare māt tulasā kī || 35 ||

स्रोत-सहित पारम्परिक पाठ। किसी निश्चित परिणाम का दावा नहीं।

यह विधि पूजा करे हमेशा ।

yah vidhi pūjā kare hameśā |

ताके तन नहिं रहै क्लेशा ॥ ३६ ॥

tāke tan nahiṃ rahai kleśā || 36 ||

करै मास कार्तिक का साधन ।

karai mās kārtik kā sādhan |

सोवे नित पवित्र सिध हुई जाहीं ॥ ३७ ॥

sove nit pavitra sidh huī jāhīṃ || 37 ||

है यह कथा महा सुखदाई ।

hai yah kathā mahā sukhadāī |

पढ़ै सुने सो भव तर जाई ॥ ३८ ॥

paṛhai sune so bhav tar jāī || 38 ||

यह श्री तुलसी चालीसा, पाठ करे जो कोय ।

yah śrī tulasī cālīsā, pāṭh kare jo koy |

गोविन्द सो फल पावही, जो मन इच्छा होय ॥

govinda so phal pāvahī, jo man icchā hoy ||

अर्थ

तुलसी की स्तुति विष्णुप्रिया के रूप में है, जिनके बिना विष्णु-पूजा अधूरी है, जो औषधि रूप हैं और विशेषकर कार्तिक मास में सौभाग्य देती हैं। चालीसा बार-बार "नमो नमो" से उन्हें प्रणाम करती है और अन्त में पूजा-विधि बताती है: गंगाजल से स्नान, चन्दन, अक्षत, पुष्प, धूप-दीप और चालीसा पाठ।

स्रोत-सहित पारम्परिक पाठ। किसी निश्चित परिणाम का दावा नहीं।

इस दस्तावेज़ के बारे में

इस दस्तावेज़ के पाठ सार्वजनिक (पब्लिक डोमेन) पारम्परिक भक्ति पाठ हैं या हमारी टीम द्वारा लिखे गए हैं, और अपने दर्ज स्रोत व संस्करण के साथ छपे हैं।

अर्थ हमारे शब्दों में संक्षिप्त व्याख्याएँ हैं, विद्वत्तापूर्ण अनुवाद नहीं। किसी पाठ के अपने श्लोकों में बताए लाभ पाठ का अंश हैं, गारण्टी नहीं।

कुछ साधनाएँ परम्परा से गुरु-मार्गदर्शन में की जाती हैं। अपनी परम्परा के मार्गदर्शन का पालन करें।